홍음 3 갱신기록 (2016.01.20.)

| 수정 일자 | 쪽번호-행번호 | 수정 내용 |
|---|---|---|
| 2016-01-20 | 15쪽-2행 | 안으로 찾는 것만이 수련이리라 -> 안으로 원인을 찾는 것만이 수련이리라 |
| | 15쪽-3행 | 해석할수록 마음은 더 무거워지거니 ->밝히려 할수록 마음은 더 무거워지거니 |
| | 161쪽-9행 | 어찌 본 체 만 체 하는가 -> 어찌 본체만체하는가 |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |